Volume-10, No. 2 Aug.-2023, pp. Hin.14-15

पुस्तक समीक्षाः दीनदयाल उपाध्याय एक अध्ययन

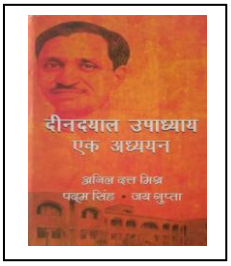

डॉ. कविता अहलावत, असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय जखोली (रूद्रप्रयाग) उत्तराखण्ड, भारत।

(अनिल दत्त मिश्रा, पदम सिंह, जय गुप्ता), ISBN 978–93–88937–29–0, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ 441, मूल्य 950

प्रस्तुत पुस्तक ''दीनदयाल उपाध्याय एक अध्ययन'' अनिल दत्त मिश्र, पदम सिंह एवं जय गुप्ता द्वारा लिखित है। लेखकों के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक का मूल उद्देश्य प. दीनदयाल उपाध्याय जी मूलतः नैतिकतावादी, राष्ट्रवादी, सांस्कृतिकवादी, सरलता और ऋजुता के नए मापदण्ड स्थापित करने वाले गरीबों के हितैषी, स्वदेशी के पुजारी एवं सर्वोदय की जगह अन्त्योदय पक्वता के विचारों का अति साधारण भाषा में प्रस्तुत करना है। पुस्तक लेखन में किन्हीं गंभीर सैद्धांतिक अवधारणाओं को गढ़ने अथवा उपयोग करने के बजाय सरल एवं रोचक अंदाज का बखूबी इस्तेमाल किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका में लेखकों द्वारा स्वीकार किया गया है कि स्वातन्त्र्योतर भारत में गॉधी, पटेल, अम्बेडकर के बाद सबसे प्रतिष्ठित, कर्मशील, कर्मयोगी और नैतिकता को पराकाष्ठा पर ले जाने वाले किसी व्यक्ति का नाम आता है तो वह नाम दीनदयाल उपाध्याय का होता है। गाँधी, नेहरू, पटेल, अम्बेडकर सभी पर सरकार ने काफी धन लगाकर मनोवांछित शोध करवाये, परन्तु गुदड़ी के लाल पं0 दीन दयाल उपाध्याय को ये नसीब नहीं मिला। 2014 में जब पहली बार पूर्ण बहुमत के साथ भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो पं0 दीनदयाल उपाध्याय पर भी शोध के लिए सरकार ने सरकारी खजाना खोल दिया। साथ ही पं0 दीनदयाल के शताब्दी वर्ष में इनके विचारों को जन–जन तक पहुॅचाया गया, जिसकी आवश्यकता व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की थी।

2016 में पं0 दीनदयाल उपाध्याय की सम्पूर्ण रचनाओं, लेखों और पुस्तकों को समेटते हुए एक सम्पूर्ण वाड्मंय 15 खण्डों में देश के सामने रखा गया। लेखकों के अनुसार इस पुस्तक में सम्पूर्ण वाड़मय को ही आधार माना गया है।

प्रस्तुत पुस्तक को आठ अध्यायों में अध्ययन की सुगमता के लिए बांटा गया है। साथ ही दीनदयाल उपाध्याय की जीवनी, वंशावली, नाना–वंशावली एवं उनके द्वारा लिखित पुस्तकों के बारे में परिशिष्ट भी जोड़े गये है।

विस्तार पूर्वक पुस्तक के प्रथम अध्याय में दीनदयाल उपाध्याय का जीवन परिचय है कि किस प्रकार परिवार के सदस्यों की मृत्यु ने ''दीना'' (बचपन का नाम) को दीनदयाल उपाध्याय बना दिया। पिता, माता, नाना, मामा, मामी, अनुज एंव नानी की मृत्यु ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बालक दीनदयाल उपाध्याय की विकास यात्रा एवं उनके चिंतन–मनन को प्रभावित किया। पुस्तक लेखकों के अनुसार किसी ने ठीक ही कहा है कि पत्थर को जितना तराशतें हैं वह उतना ही चमकता है। हिना रंग लाती घिसने के बाद, ठीक उसी प्रकार संघर्ष के अनुभव और उसको झेलने की क्षमता ने दीनदयाल के जीवन एवं चिंतन दोनों को निखारा। जीवन परिचय के इस अध्याय से पता चलता है कि दीनदयाल उपाध्याय बी.ए. की पढ़ाई के दौरान ही कानपुर में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के सम्पर्क में आये और आजीवन संघ प्रचारक रहे।

1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना तथा 1952 में ही वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री बने एवं लगभग 5 वर्षों तक इस पद पर सुशोभित रहे। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनकी संगठन क्षमता से बहुत

अधिक प्रभावित थे। दीनदयाल मात्र 43 दिन ही जनसंघ के अध्यक्ष पद पर रहे कि 10 फरवरी 1968 की अर्द्ध रात्री को मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर उनकी दुर्भाग्यपूर्ण हत्या हो गयी।

लेखकों के अनुसार दीनदयाल उपाध्याय ने मरकर भी अमरत्व को प्राप्त कर लिया।

पुस्तक के दूसरे अध्याय में दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन और कृतित्व पर किन चीजों का प्रभाव पड़ा उसका विस्तार से वर्णन किया गया है। उन्होंने पाश्चात्य दर्शन एवं विद्वानों को खूब पढ़ा लेकिन उनके भाषणों एंव लेखन में ज्यादातर भारतीय मनीषियों और परम्पराओं का ही प्रभाव स्पष्ट रूप से देखते है। दीनदयाल के जीवन पर सबसे ज्यादा प्रभाव परिवार जनों की मृत्यु का पड़ा जिसके कारण उनमें हार न मानने वाली प्रवृति, गरीबों के उत्थान के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देना तथा हर परिस्थिति में साधन–शुद्धि की प्राथमिकता उनमें स्वतः प्रस्फुटित हुई। दूसरा प्रभाव प्रमुख रूप से उन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का रहा है।

अध्याय तीन ''दीन दयाल उपाध्याय रचना संसार'' है। इस अध्याय में उनके लगभग पचास वर्ष के जीवन काल में से तीस वर्ष के सार्वजनिक जीवन में लिखी गयी प्रमुख पुस्तकें व लेख, दिए गए महत्वपूर्ण भाषण तथा पत्रों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। उनके द्वारा रचित प्रमुख पुस्तकें 'सम्राट चन्द्रगुप्त', 'जगदगुरू श्री शंकराचार्य', 'अखड भारत क्यों?, 'हमारा कश्मीर' इत्यादि है।

पुस्तक का चौथा अध्याय ''एकात्म मानववाद'' है जो कि दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की 'आत्मा' कहा जा सकता है। दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार 'एकात्म मानववाद' का शाब्दिक अर्थ है मानव में शरीर, मस्तिष्क, बुद्धि और आत्मा को चार पुरूषार्थ–धर्म, अर्थ काम और मोक्ष से एकमत होते हुए उनके अनुरूप होना। अध्याय के अनुसार एकात्म मानववाद पश्चिमी सभ्यता का विरोध करता है। खासकर पूंजीवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद तथा अंधाधुंध औद्यौगिकीकरण।

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानवदर्शन राजनीतिक प्रजातंत्र के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक प्रजातंत्र को एकीकृत करता है तथा अन्याय, हिंसा, शोषण–उत्पीड़न, अत्याचार के खिलाफ लड़ने का मार्ग दिखाता है।

अध्याय पाँच ''दीनदयाल का राजनीतिक दर्शन'' से संबन्धित है। इस अध्याय में दीनदयाल उपाध्याय के 'चिति' पर लिखे गए दो लेखों को मूल रूप में प्रस्तुत किया गया है। दीनदयाल के अनुसार 'चिति' ही राष्ट्रत्व का द्योतक है। छठे अध्याय के अन्तर्गत उनके सामाजिक विचारों को एक जगह रखने का प्रयास किया गया है। जिसमें वर्ण व्यवस्था, हिन्दू–मुस्लिम धर्म की व्याख्या तथा व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध जैसे विषय है।

सातवें अध्याय में दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों का विश्लेषण तथा उनकी वर्तमान समय में उपयोगिता का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। उनका मत था कि अर्थ की अधिकता और अर्थ की बहुत कमी दोनों ही स्थिति मनुष्यों को पथभ्रष्ट करती है। इस प्रकार दीनदयाल का आर्थिक चिन्तन कहीं न कहीं भारतीय चिंतन के चार पुरूषार्थ के सिद्धांत से प्रभावित दिखता है।

अंतिम अध्याय दीनदयाल उपाध्याय की वर्तमान समय में प्रासांगिकता से सम्बन्धित है। इसमें सेकुलरिज्म, दलित उत्पीड़न, किसानों की समस्या, बेरोजगारी आदि वर्तमान समस्याओं का समाधान उनके विचारों द्वारा करने का प्रयास किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक पाठन से विदित होता है कि दीनदयाल उपाध्याय जो 'पण्डित जी' के नाम से विख्यात हुए एक सृजनात्मक लेखक, संगठनकर्ता एवं सच्चे राष्ट्रभक्त थे। संघ के प्रति उनका समर्पण अभूतपूर्व रहा।

आकार, शब्द चयन, वाक्य–विन्यास एवं व्याकरण की दृष्टि से पुस्तक गंभीर रूप से सटीक है। एक विराट प्रतिष्ठित कर्मयोगी के सम्पूर्ण जीवन के सभी महत्वपूर्ण घटनाक्रमों, विचारों, लेखों तथा भाषणों को अपने में समेटती है। यह पुस्तक विद्यार्थियों, पत्रकारों, आचार्यों एवं भारतीय चिंतन की समझ में रूचि रखने वाले सभी पाठकों के लिए उपयोगी है। पुस्तक जीवनी की तरह दीनदयाल उपाध्याय के जीवन के सभी पहलुओं से सम्बन्धित है। इसलिए रोचकता एवं हल्कापन अपेक्षित भी है। लेकिन बावजूद इसके पुस्तक सामग्री पाठक को बाधें रखती है। यही किसी पुस्तक का प्रभाव एवं आकलन है। संलग्न सन्दर्भ ग्रंथ सूची एवं सुनियोजित अनुक्रमणिका पुस्तक को और अधिक प्रभावशाली दर्शाती है।

दीनदयाल उपाध्याय पर लिखी अनेक पुस्तकों में से यह पुस्तक सरल, संक्षिप्त एवं रोचक है। इस प्रकार पुस्तक के माध्यम से पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विचार जन–जन तक पहुँचे जिसकी आवश्यकता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को थी।